3224
255 P
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1273
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 3224

वन्देमातरम्

"Give me liberty

OR

Give me dea

प्रकाशक

'युवक-हृदय'

हिन्दू-विश्व-विद्यालय

काशी

891.431
B222 M

...AL ARCHIVES LIBRARY
No 3224
Date 4.4.72
GOVT. OF INDIA

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्य श्यामलां मातरम् ।
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित यामिनीं
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीं
सुहासिनी सुमधुरभाषिणीं
सुखदां वरदां मातरम् ॥
त्रिंश-कोटि-कल-कण्ठ-कल-निनाद-कराले
द्वि-त्रिंश-कोटि-भुजै-र्धृत-खर-करवाले
के बले मा तुमि अबले !
बहुबल धारिणीं नमामि तारिणीं
रिपु-दलवारिणीं मातरम् ॥

भारत न रह सकेगा हरगिज़ ग़ुलामख़ाना।
आज़ाद होगा होगा आता है वो ज़माना॥
ख़ूँ खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द ज़ुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झंडे पै जाँ निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं ये तराना॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है इस जेल औ दमन की।
इक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंज़ूर सर कटाना॥

—शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल'

———...———

कुछ आरज़ू नहीं है, है आरज़ू तो ये है।
रख दे कोई ज़रा सी ख़ाके वतन क़फ़न में॥

—शहीद अशफ़ाक़

र फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है॥
रहवरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सेहरान वर्दी दूरिये मंज़िल में है॥
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
अब न अगले बलबले हैं औ न अरमानों की भीड़।
एक मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है॥
आज यक़तल से ये क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नायें शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क़ मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरे हिम्मत की चर्चा ग़ैर के महफ़िल में है॥

—बिस्मिल

"Aggressive fight for the right is the noblest sport in the world."

चाह नहीं है सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ूँ हार में ललचाऊँ ॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं डाला जाऊँ ।
चाह नहीं है देवों के सिर चढ़ूँ भाग्य पर इतराऊँ ॥
मुझे तोड़ कर हे बनमाली
उस पथ में देना तू फेंक,
मातृभूमि हित शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक ।

"Swaraj is not meant for cowards but for those who would mount smilingly to the gallows and refuse even to allow their eyes te be bandaged."

—*Mahatma Gandhi.*

नी जन्मभूमि वेदी पर जो सर्वस्व चढ़ाते हैं।
धन्य धन्य जीवन है उनका, वही जन्म फल पाते हैं॥

अत्याचार अनीति दबाते
दीन दुखी का हाथ बटाते
स्वतन्त्रता का श्रोत बहाते
मातृभूमि की लाज बचाते
जो बन्दी जाते हैं

धन्य धन्य जीवन है उनका, वही जन्म फल पाते हैं।

निर्वासन है नन्दन बन सा
कटि कोपीन विचित्र वसन सा
है जंज़ीर सुमन-बंधन सा
कारागृह है देव-सदन सा
वही स्वर्ग-सुख पाते हैं

धन्य धन्य जीवन है उनका, वही जन्म फल पाते हैं।

"One only enjoys oneself when he is in danger."

—*Napoleon.*

हम सरे दार बसद शौक़ जो घर करते हैं,
ऊँचा सर क़ौम का हो नज़र ये सर करते हैं।
सूख जाये न कहीं पौधा ये आज़ादी का,
ख़ून से अपने इसे इसलिये तर करते हैं॥

× × × ×

जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हर्गिज़,
न जाने बाद मुर्दन मैं कहाँ औ तू कहाँ होगा॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरनेवालों का यही बाकी निशाँ होगा॥
इलाही वह भी दिन होगा जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही ज़मीं होगी औ अपना आसमाँ होगा॥

"Woe unto a nation in whose judgement seat, a stranger sits."

—*De-Velera.*

झंडा विश्व तिरंगा प्यारा,

झंडा ऊँचा रहे हमारा ॥

सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम सुधा सरसानेवाला

वीरों को हरसानेवाला, मातृभूमि का तन मन सारा ॥१

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लख कर बढ़े जोश क्षण-क्षण में

काँपें शत्रु देख कर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ॥२॥

इस झंडे के नीचे निरभय, लें स्वराज यह अविचल निश्चय

बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा ॥३॥

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ,

एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ॥४

इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये,

विश्व मुग्ध करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥५॥

"One for all and all for one-this is our law if we want to crush the foe."

—*Maxim Gorky.*

राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो न[illegible] ।
भारत जननी के गौरव की अविचल शाखा नमो नमो ।।
कर में लेकर इसे सूरमा तीस कोटि भारत सन्तान,
हँसते-हँसते मातृभूमि के चरणों पर होंगे बलिदान,
हो घोषित निर्भीक विश्व में, तरल तिरंगा नवल निशान,
वीर-हृदय खिल उठे, मार लें भारतीय त्तण में मैदान,
हो नस २ में व्याप्त चरित सूरमा शिवा का नमो नमो ।।१।।

राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो ।
नवयुवको ! स्वातंत्र्य समर में, नवजीवन संचार करो,
शस्त्र अहिंसा से दल कर, दासता-दुर्ग को त्तार करो ।
शांति-क्रांति युग में हे वीरो, ! जीवन-सुमन निसार करो !
ऊँचे स्वर से एक साथ जननी का जय-जय-कार करो ।
शक्ति देख कर शत्रु-शिविर में, मचे सनाका नमो नमो ।।२।।
राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो ।

———•••———

एहसान ना ख़ुदा का उठाये मेरी बला
किश्ती ख़ुदा पै छोड़ दूँ लंगर को तोड़ दूँ ।

हिमालय की चोटी पर जाकर इसे उड़ायेंगे,
विश्व-विजयिनी राष्ट्रपताका का गौरव फहरायेंगे,
सब से ऊँची रहे न इसको नीचे कभी झुकायेंगे,
समराङ्गण में लाल लाड़िले लाखों बलि २ जायेंगे।
गूँजे स्वर संसार-सिन्धु में स्वतंत्रता का नमो नमो ॥३॥
राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो।

The first lesson that students should bear is to shed fear. Freedom can never be won by those who are afraid of rustincation poverty and even Death. Let the students realise that learning without courage is like a waxen statue, beautiful to look at but bound to melt at the least touch of a hot substance.

—*Mahatma Gandhi.*

यह राष्ट्र-ध्वजा धन मेरा जीवन बलिदान करेंगे
झंडा है प्राण हमारा, प्राणों से बढ़ कर प्यारा,
तन मन धन इस पै वारा, जीवन क़ुरबान करेंगे ॥१॥
शूली पर उछल चढेंगे, बन्धन से नहीं डरेंगे,
सब कुछ सानन्द सहेंगे, पर झंडा नहीं तजेंगे ॥२॥
आओ झंडा फहरावें, शुचि राष्ट्र-भाव दर्शावें,
सत्याग्रह-समर दिखावें, पर हिंसा नहीं करेंगे ॥३॥

My challang to the British nation is—will you settle it with pen or sword, with ink or blood ? India has got no arms but if she has to fight with her back to the wall, she can make swords out of her bones, and she will have her freedom.

—*Sarojini Naidu.*

चिनगारियाँ

(१)

हो जाना नीलाम मृत्यु से, कायरता है, दुख है।
हँस हँस चढ़ना बलि वेदी पर, निर्भयता है. सुख है।
क्यों होते भयभीत मृत्यु से, आत्मा अजर, अमर है।
बलिवेदी पर बढ़ो वीर! 'जयमाल' तुम्हारे कर है।
'शिवा' 'प्रताप' समान, 'देश' पर शीश-प्रसून चढ़ा दो।
स्वतन्त्रता के अमर-शहीदों में निज-नाम लिखा दो।

(२)

प्राणों पर इतनी ममता, औ स्वतन्त्रता का सौदा ?
बिना तेल के दीप जलाने का है कठिन-मसौदा!
मोती बिखराते बीतेंगी, जलती-जीवन-घड़ियाँ।
बिना चढ़ाये शीश, नहीं टूटेंगी 'मा' की कड़ियाँ।
दुनि या में जीने का सबसे सुन्दर मधुर-तक़ाज़ा।
ऐ शहीद! उठने दे अपना फूलों भरा जनाज़ा।

In India, sedition is not crime but Dharma.

—*Rajendra Prasad.*

ताज़े-घाव

कटघरों में बन्द मेरे 'शेर' हैं।
सुन रहे कोई न उनकी टेर हैं।
हाय ! कितना ज़ुल्म जालिम कर रहे।
भूख से 'बच्चे' तड़पते, मर रहे।
दिवस सत्तर से हुये कुछ तो अधिक !
मार ही डालेंगे क्या उनको बधिक ?
हाय ! मुँह से तो खिलाना है अलग।
नाक से हैं ठूँसते भोजन बधिक।
क्यों न शूली पर चढ़ाते हैं उन्हें।
हाय ! ऐसे क्यों सताते हैं उन्हें।
हिन्दुओ ! तुमको शपथ है 'राम' की।
मुस्लिमों ! तुमको शपथ 'रहमान' की।
है तुम्हें जीना, जियो आज़ाद हो।
मत कभी जंज़ीर में बँध कर रहो।

'Our creed still stands and we are pledged to struggle by peaceful non-violence, but if the government continues to behave like this, I would not wonder if the youngmen were to go out of our hands to do whatever they like with the object of gaining the freedom of their country. I do not know if I shall be alive to see that day but whether I am alive or dead ; if that day is forced upon you by government my spirit from behind will bless you for struggle"

—*Lala Lajpat Rai.*

Excess of severity is not the path to order. On the contrary it is the path to bomb.

—*Viscount Morley.*

TO THE YOUTH OF INDIA,

The time has come when the youth must be in the vanguard in the struggle for the national revolutionary emancipation of the oppressed millions. The great war has brought no peace. Proletariats were asked to shed blood in it for the luxury of the czars in the winter-palaces and they meet censorship, deporation, class-justice, arrest, executions at the

heads of their white Masters. They ask for bread and get bullets in return. Mentality of youngmen they crush. They give us education to be their better slaves. We can not do anything freely. Everything is seditious in this Satanic State.

Then what are we going to do ? Ye ! youngmen and women of India, look to your comrades in China, Ireland, Russia and other countries and be up and doing.

So many Mac Swineys are pining away in the jails and so many Lajpats are beaten to death. When Mahendrapratapa are exiled, and

Bhagats and Dutts are transpor‑‑d for life, what are we young men for ? **SHOULD WE SIT IDLE ?** Let us from a united front and a fraternal alliance between the youths and set to work. Public opinion must be informed throughly of the danger of the impending war, political terrer, econmic exploitation, and ruthless tyranny. Ytilise every sundays and like holidays in constructive work.

BE AGGRESSIVE.

and

SHAKE TO EARTH YOUR CHAINS LIKE DUE WHICH IN SLEEP HAVE FALLEN ON YOU.

—*Your friend*

"I offer neither pay, nor quarter, nor provisions; I offer hunger, thirst, forced marches, battles and death. Let him who loves his country in his heart, not with his lips, only follow me."

—Garibaldi.

"People can amend the existing government by constitutional measure or they can dismember or overthrow it by revolution."

—A. Lincoln.

मुद्रक श्री प्रवासीलाल वर्मा
सरस्वती प्रेस, बनारस सिटी